Seat No. _____

HP-1901030401020001

B. A. (Sem.-II) (CBCS)

(W.E.F. 2019) Examination

April - 2023

Hindi : (Compulsory)

(आधुनिक हिन्दी काव्य : पंचवटी एवं व्याकरण (अनिवार्य))

(New Course)

Time : $2\frac{1}{2}$ Hours / Total Marks : **70**

सूचना : (1) सूचनानुसार सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।
(2) सभी प्रश्नों के अंक दाहिनी ओर निर्दिष्ट हैं।

1 राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दीजिए। **14**

अथवा

1 खण्डकाव्य के लक्षणों के आधार पर 'पंचवटी' काव्य का मूल्यांकन कीजिए। **14**

2 'पंचवटी' खण्डकाव्य के आधार पर शूर्पणखा का चरित्र–चित्रण कीजिए। **14**

अथवा

2 'पंचवटी' खण्डकाव्य का कथासार लिखते हुए उसके उद्देश्य पर प्रकाश डालिए। **14**

3 'पंचवटी' खण्डकाव्य का नायक आप किसे मानते हैं ? इस प्रश्न का सतर्क उत्तर देते हुए उसके चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए। **14**

अथवा

3 भावपक्ष एवं कलापक्ष की दृष्टि से 'पंचवटी' खण्डकाव्य का मूल्यांकन कीजिए। **14**

4 '''पंचवटी' खण्डकाव्य की सीता हमारे सामने भारतीय नारी का अनुपम आदर्श प्रस्तुत करती है।'' – इस कथन की समीक्षा कीजिए। **14**

अथवा

4 'पंचवटी' खण्डकाव्य के मूल स्रोत की चर्चा करते हुए कवि गुप्त जी के द्वारा की गई मौलिक उद्‌भावनाएँ विस्तार से लिखिए। **14**

5 (अ) पल्लवन कीजिए: 7

जो देखते ही मन मोह ले, वह चित्र है,
जो गिरते ही थाम ले, वह मित्र है।

अथवा

मनःप्रसाद चाहिए केवल,
क्या कुटीर फिर क्या प्रासाद?

(ब) संक्षेपण कीजिए: 7

भारत कोई नया देश नहीं है। जिस भाषा में उसकी संस्कृति का विकास हुआ, वह संसार की सबसे प्राचीन भाषा है। जो ग्रंथ भारतीय सभ्यता का आदिग्रंथ समझा जाता है, वही समग्र मानवता का भी प्राचीनतम ग्रंथ है। विदेशियों द्वारा बार–बार पद–दलित होने पर भी भारत अपनी संस्कृति से मुँह मोड़ने को तैयार नहीं हुआ। अब जो वैज्ञानिक और औद्योगिक सभ्यता आ रही है, वह भी भारत में उसके अतीत का प्रेम नहीं छीन सकेगी। सत्य केवल वही नहीं है जो पिछले दो सौ वर्षों में विकसित हुआ है। उस ज्ञान का आज भी बहुत सा अंश सत्य है, जिसका विकास पिछले छह हजार वर्षों में हुआ है। भारत को वह नवीन सत्य भी चाहिए, जो शारीरिक समृद्धि को सम्भव बनाता है और प्राचीनकाल का वह सत्य भी जो शारीरिक समृद्धि के लिए आत्मा के हनन को पाप समझता है।

अथवा

प्रकृति मानव जीवन का अभिन्न अंग है। मनुष्य और प्रकृति का सम्बन्ध अनादि काल से रहा है। प्रकृति हमें स्वावलम्बन का पाठ पढ़ाती है। पक्षी और जानवर अपने बच्चों को तभी तक पालते हैं, जब तक वे अशक्त रहते हैं। पक्षी के बच्चे जब उड़ने लगते हैं, तब वे उन्हें छोड़ देते हैं। बच्चों को अपना भोजन आप ढूँढना पड़ता है। सुधरे हुए देशों में भी यही बात है। बच्चों के ऊपर माँ–बाप की देखभाल तभी तक रहती है, जब तक वे विद्यार्थी–जीवन में हैं। उसके बाद वे स्वतंत्र हो जाते हैं और अपना भार आप संभाल लेते हैं।